अध्ययन सामग्री
बी॰ए॰ पार्ट 2
प्रश्नपत्र - तृतीय
डॉ॰ मालविका तिवारी
सहायक प्रोफेसर
संस्कृत विभाग
एच॰ डी॰ जैन कॉलेज
वी॰ कुं॰ सिं॰ वि॰, आरा

दशकुमारचरितम्

27.07.20

राजवाहन का चरित्र-चित्रण करें

चरित्र-चित्रण की सजीवता की दृष्टि से महाकवि दण्डी विरचित 'दशकुमारचरितम्' का सम्पूर्ण संस्कृत वाङ्मय में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। शूद्रक प्रणीत 'मृच्छकटिकम्' नामक प्रकरण के अतिरिक्त सारे संस्कृत साहित्य में शायद ही कोई अन्य ग्रन्थ उपलब्ध है जिसमें चित्रित चरित्र समाज का वास्तविक प्रतिनिधित्व करते हैं। इस दृष्टि से दशकुमारचरित एक अद्वितीय ग्रन्थ है। इसमें वर्णित राजा से लेकर ऐन्द्रजालिक सदृश सामान्यजन तक के चरित्र में मानवीय दुर्बलताएँ समान रूप में दृष्टिगत होती हैं। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि तत्कालीन समाज में केवल दुर्बलताएँ ही थीं। उनमें दिव्य गुणों का भी अभाव नहीं था। वस्तुतः दण्डी ने तत्कालीन समाज के शोभन और अशोभन पक्षों को अपने ग्रन्थ में सन्निविष्ट कर अपने चित्रण में जीवन्तता प्रदान की है।

राजवाहन तत्कालीन समाज का ही एक युवा राजकुमार है। राजवाहन दशकुमारचरित का नायक है। वह मगधनरेश राजहंस और महारानी वसुमती का औरस पुत्र था। एक राजकुमार होने पर भी राजकुमार का प्रारम्भिक

जीवन सादा था क्योंकि पिता मालवनरेश मानसार से पराजित होकर वन में रह रहे थे। राजवाहन में निम्नलिखित विशेषताएँ द्रष्टव्य हैं -

1) धीरललित नायक - राजवाहन धीरललित कोटि का नायक है। मंत्री आदि पर भार सौंप कर उद्वेगरहित भाव वाला, कोमल स्वभाव वाला, नृत्य-गीतादि में आसक्त नायक धीरललित कोटि का होता है। प्रेम की अवस्था में वह अनुकूल नायक है जो एक ही नायिका अवन्तिसुन्दरी पर आसक्त रहता है।

2) आकर्षक व्यक्तित्व - राजवाहन आकर्षक शरीर वाला युवक है। वह शर चाप विहीन साक्षात् कामदेव की भाँति है, इसलिए अवन्तिसुन्दरी मन-ही-मन सोचती है - "अनन्यसाधारणसौन्दर्येणानेन कस्यां पुरिभाग्यवतीनां तरुणीनां लोचनोत्सवः क्रियते।" वह उन स्त्रियों को भाग्यवती समझती है जो उसके दर्शन कर पाती होंगी, जो उसकी माता होगी और जो उसकी अर्द्धांगिनी होगी - "पुत्ररत्नेनामुना पुरन्ध्रीणां पुत्रवतीनां सीमन्तिनीनां का नाम सीमन्तमौक्तिकीक्रियते ? कास्य देवि ?"

3) दयालु हृदय - राजवाहन दयालु प्रकृति का था। द्वितीय उच्छ्वास में मातङ्ग की प्रार्थना पर वह आधी रात में ही अपने मित्रों को छोड़कर अनजान मातङ्ग की रक्षा करते हुए पाताल तक गया और उसका अभीष्ट कार्य पूर्ण करने के पश्चात् लौट आया। नायक के सात्विक गुणों का वर्णन करते हुए विश्वनाथ साहित्य दर्पण में औदार्य का उल्लेख भी करते हैं -

"दानं सप्रियभाषणमौदार्यं शत्रुमित्रयोः समता।"

4) मित्रों के प्रति प्रेम - राजवाहन के कई मित्र थे। उसे अपने मित्रों से अतिशय प्रेम था। सोमदत्त से मिलन के समय उसका गला रूँध गया और उसने मित्र का प्रगाढ़ आलिङ्गन किया - "प्रमोदाश्रुपूर्णो राजा पुलकिताङ्गं गाढमालिङ्ग्य अथ साम्य सोमदत्त इति व्यजहार।"

पुष्पोद्भव को प्रणाम करते देख राजवाहन ने उसे गले से लगा लिया।

5) परा्क्रमी – राजवाहन पराक्रमी कुमार है। उसके जन्म से पूर्व ही वामदेव ऋषि ने कहा था – 'वसुमति गर्भस्थः सकल रिपुकुल-मर्दनो राजनन्दनो नूनं संभविष्यति।' द्वितीय उच्छ्वास में मातङ्ग ने भी राजवाहन को देखकर सोचा कि निश्चय ही यह तेजस्वी पुरुष साधारण नहीं हो सकता – "तेजोमयोऽयं मानुषमात्रपौरुषो नूनं न भवति।" वह शतक्रतु को भी पराजित करने की क्षमता रखता था – "निजतेजोजितपुरुहूतो।"

6) सच्चरित्रता – वह सच्चरित्र युवक था। अति रूपवती असुरराज कन्या कालिन्दी को देखकर भी उसका हृदय विचलित नहीं हुआ और न ही मृगनयनी बालचन्द्रिका को देखकर दोलायमान। किन्तु अपनी पूर्वजन्म की पत्नी अवन्तिसुन्दरी को देखते ही उसका हृदय प्रेमासक्त हो गया और वह सोचने लगा –

"नूनमेषा पूर्वजन्मनि मे जाया यज्ञवती। नो चेदेतस्यामेवं विधोऽनुरागो मन्मथस्तिन जायते।"

तत्कालीन समाज में बहुविवाह करना नृपों के लिए गौरव की बात थी किन्तु राजवाहन को अपनी प्रियतमा से इतना प्रेम था कि उसने अन्य किसी को अपनी पत्नी नहीं बनाया। राजवाहन का प्रेम आध्यात्मिक था। वह अपने प्रणय को जन्म-जन्मान्तर से जोड़ना चाहता था।

राजवाहन मर्यादाओं का पालन करता था। प्रथम दृष्टि में ही वह अवन्तिसुन्दरी से स्नेह करने लगता है किन्तु उसे मित्र के अतिरिक्त अन्य किसी के समक्ष प्रकट नहीं करता है। भारतीय परम्पराओं के अनुसार प्रेमाभिव्यक्ति की पहल स्त्रियों की ओर से ही होनी चाहिए। अतः राजकुमार अवन्तिसुन्दरी के संदेश की धैर्यता से प्रतीक्षा करता है।

राजवाहन की स्मरणशक्ति अत्यन्त तीव्र है। अवन्तिसुन्दरी को देखकर उसे अपना पूर्वजन्म स्मरण हो

आता है। वह उसे पूरी कहानी सुना देता है। राजकुमार अपनी प्रेयसी के सुख-दुःख की चिन्ता करता है अतः वह बालचन्द्रिका से कहता है कि ऐसा उपाय करना जिससे शिरीष पुष्प के सदृश कोमल राजकुमारी को शारीरिक कष्ट न हो। वह राजकुमारी के शोचनीय दशा के कारण उससे मिलना चाहता है किन्तु कन्यान्तःपुर में प्रवेश करना कोई आसान कार्य नहीं है तथापि वह एक-दो दिनों के अन्दर उससे मिलने का वचन देता है — "दुष्करः कन्यान्तःपुरप्रवेशः। तदनुरूपमनुपायमुपाध्य श्वः परश्वो वा नताङ्गीं संगमिष्यामि।"

7) विद्वता — राजवाहन विद्वान् राजकुमार है। अतः उसे अनेक विद्याओं व शास्त्रों का पर्याप्त ज्ञान है। दण्डी उसके विषय में लिखते हैं — "ततः सकललिपिज्ञानं निखिलदेशीयभाषा पाण्डित्यं षडङ्ग-सहितवेदसमुदायको विद्वत्वं। काव्यनाटकाख्यानकाख्यायिकेतिहासचित्रकथा ———— वाहनरोहणपाटवं चौर्यदुरोदरादि कपट-कलाप्रौढत्वं च।"

8) धैर्यवान — राजवाहन धैर्यवान व्यक्ति है। काम-पीड़ित होने पर भी वह अपनी उत्कण्ठा व्यक्त नहीं करता है। उचित समय की वह प्रतीक्षा करता है। धैर्य एक महान् गुण है। उसकी मधुर वाणी उसकी मधुर आकृति के अनुरूप ही थी। ब्राह्मण विद्येश्वर को देखकर राजवाहन ने आदरपूर्वक अपनी मधुरवाणी से उसका परिचय पूछा — "को भवान् कस्यां विद्यायां निपुणः"। वह लज्जालु प्रकृति का है। अपने से ज्येष्ठ के समक्ष विवाहादि की बातों से लज्जावान हो जाता है। विद्येश्वर के समक्ष मित्र द्वारा अवन्तिसुन्दरी के प्रति उसके प्रेम की चर्चा होने पर उसका मुख आरक्त हो जाता है।

राजवाहन उत्तम गुणों से युक्त, उत्तम कुलोत्पन्न, उत्तम मित्रों से युक्त एक उत्तम राजकुमार है। वह उद्यमी है, साहसी है, धैर्यवान है, बुद्धिमान है, शक्तिशाली

तथा पराक्रमी है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि महाकवि दण्डी ने राजवाहन के चरित्र को दर्शाने में अपनी बहुमुखी प्रतिभा का यथेष्ट उपयोग किया है।